भगवत रावत की कविताएं

चट्टानें

चारों ओर फैली हुई
स्थिर और कठोर चट्टानों की दुनिया के बीच
एक आदमी
झाड़ियों के सूखे डंठल बटोर कर
आग जलाता है

चट्टानों के चेहरे तमतमा जाते हैं
आदमी उन सबसे ब़ेखबर
टटोलता हुआ अपने आप को
उठता है और उनमें से किसी एक पर बैठकर
अपनी दुनिया के लिए
आटा गूंधता है

आग तेज़ होती है
चट्टानें पहली बार अपने सामने
कुछ बनता हुआ देखती हैं

अंत में आदमी
उठ कर चल देता है अचानक
उसी तरह ब़ेखबर

चट्टाने पहली बार
अपने बीच से कुछ गुजरता हुआ
महसूस करती हैं।

डर

इतने डरे हुए हैं वे लोग
कि खतरे को खतरा कहते हुए
जुबान की तरह
खुद लड़खड़ाने लगते हैं

चेहरे की संतुष्ट सुर्खी
पीली पड़ने लगती है
आंखें गोल-गोल घूमती हुई
सूंघने लगती हैं
कि आस-पास
कहीं कोई डर तो नहीं

वे हर लड़ाई में
अपनी हाज़िरी लगवाना चाहते हैं
वे लड़ना चाहते हैं
ऐसी लड़ाई
जहां लड़ाई सिर्फ एक शब्द हो
घरों में रखी उन चीज़ों की तरह
जो उनका दर्जा बताती हैं

उन लोगों से मिला था मैं कल शाम एक सभा में
सुविधाओं के मारे हुए
वे जुबान की जगह टेपरिकार्ड लाये थे
मुद्दों के बजाय वे पहले
मुद्दों की परिभाषा पर
बहस करना चाहते थे

कोई भी निर्णय लेते-लेते
उन्हें डर था कि कहीं
निर्णय हो तो नहीं गया।

पाठक मंच

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। इस बार आपने ईएसआई की अच्छी ख़बर ली है। वास्तव में ईएसआई में मज़दूरों की सहायता की जगह उनका शोषण हो रहा है।

लगभग हर जगह ईएसआई की दशा बदहाल है, कहीं कम तो कहीं ज़्यादा। ईएसआई की व्यवस्था में सुधार संभव नहीं लगता, क्योंकि 'खाने-पीने' का जुगाड़ करने वाले ज़्यादा हैं और ईमानदारी से काम करने वाले बहुत ही कम। ऐसे में वे ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ लोगों पर भारी पड़ जाते हैं।

अंक में गन्ना किसानों के शोषण पर अच्छा लेख है। नक्सलवाद पर प्रकाशित लेख भी अच्छा लगा। इस बार आपने बड़ी ही अच्छी कहानी प्रकाशित की है। इस कहानी को मैंने कई बार पढ़ा। इस अंक को मैंने सुरक्षित रख लिया है। अगले अंक का इंतज़ार है।

- रामचंद्र सिंह, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का नया अंक मिला। पूर्व की भांति ही सारी सामग्री बेहतर एवं प्रासंगिक है। नक्सलवाद पर लेख काफ़ी अच्छा लगा।

वास्तव में नक्सलवाद कानून और व्यवस्था की समस्या नहीं है, वरन एक सामाजिक समस्या है। लेख में यह सच कहा गया है कि जब तक गरीबी की समस्या दूर नहीं होती, तब तक नक्सलवाद पर काबू पाना मुश्किल है। गन्ना किसानों की दुर्दशा पर प्रकाशित लेख अच्छा लगा। 'तमाशा' शीर्षक कहानी भी काफ़ी पसंद आई।

हर अंक में इतनी बड़ी नहीं तो छोटी कहानियां आप अवश्य प्रकाशित करें। कभी साहित्यिक परिदृश्य पर भी लेख आदि प्रकाशित करें।

-मुकेश कुमार, गुड़गांव

मजदूर मोर्चा पढ़ने को मिला। इस तरह के जनपक्षधर अख़बार आजकल कम ही प्रकाशित होते हैं। स्थानीय स्तर पर प्रकाशित होने वाले अख़बार स्तरीय नहीं, वरन घटिया और इधर-उधर से उड़ाई सामग्री एवं विज्ञापनों से भरे होते हैं। अख़बार का काम लोगों की चेतना को आगे बढ़ाना है। अख़बार सांस्कृतिक क्रांति के वाहक होते हैं। मज़दूर मोर्चा इस भूमिका को निभा रहा है, यह अत्यंत ही प्रसन्नता की बात है।

- राकेश कपूर, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का नया अंक पढ़ने को मिला। सामग्री पहले की भांति ही स्तरीय और ज्वलंत मुद्दों को उठाने वाली है। इस अंक में प्रकाशित 'तमाशा' नामक कहानी बहुत अच्छी लगी।

कृपया समय-समय पर स्वदेश दीपक की अन्य कहानियों को भी प्रकाशित करें। नक्सलवाद की समस्या पर प्रकाशित लेख काफ़ी अच्छा लगा। इस तरह के लेखों के प्रकाशन की काफ़ी आवश्यकता है ताकि जनता में नक्सलवाद को लेकर भ्रम की स्थिति नहीं रहे। अन्य सामग्री भी अच्छी लगी।

-दीपक कुमार, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का अंक मिला। इस अंक की सामग्री अन्य अंकों की तरह ही अच्छी है। सच पूछा जाये तो स्थानीय स्तर पर ऐसा प्रकाशन दुर्लभ है। मैं इस पत्र के माध्यम से नगर निगम के आयुक्त महोदय का ध्यान संजय कॉलोनी में व्याप्त गंदगी की तरफ दिलाना चाहता हूं।

अन्य क्षेत्रों में भले ही जासे भी हालत हो, संजय कॉलोनी जहां निम्न आय वर्ग के लोग ज्यादा संख्या में रहते हैं, सफाई व्यवस्था पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

लोग अपने घरों का कूड़ा-कचरा बाहर खुले में जमा कर देते हैं और उसे उठाया नहीं जाता।

कूड़े-कचरे के सड़ने से हरा तरफ दुर्गंध फैली रहती है। कचरा जमा होने के कारण मच्छरों की ऐसी बाढ़ आई हुई है कि पूछें मत। अगर ऐसी ही स्थिति बनी रही तो कोई न कोई महामारी फैल सकती है। आयुक्त महोदय से करबद्ध विनती है कि वे इस समस्या पर ध्यान दें और सफाई की उचित व्यवस्था का प्रबंध करें।

- रामस्वरूप पांडे, फरीदाबाद

मज़दूर मोर्चा का ताजा अंक पढ़ने को मिला। इसे पढ़ने पर यह लगा कि जैसी सामग्री इसमें प्रकाशित है, वैसी सामग्री कहीं और किसी भी अखबार और पत्रिका में नहीं मिली। वास्तव में मज़दूर मोर्चा निर्भीक पत्रकारिता का एक जीवंत उदाहरण है।

आजकल जब पत्रकारिता का उद्देश्य महज पैसा कमाना रह गया है, मज़दूर मोर्चा ने यह दिखा दिया है कि जनहित में पत्रकारिता कैसे की जाती है। इस अंक में प्रकाशित सभी समाचार और लेख पसंद आये।

ईएसआई की व्यवस्था पर आपने करारा प्रहार किया है और उसकी अराजक व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया है। सवाल यह है कि इससे ईएसआई के संचालक कुछ सबक लेंगे या पूर्ववत ही काम करते रहेंगे। ईएसआई की इस दुर्दशा और उसके मज़दूर विरोधी चरित्र पर श्रम मंत्री को ठोस कार्रवाई करनी चाहिए।

- विनय शर्मा, फरीदाबाद

पृष्ठ 1 का शेष

कायर पुलिस पर हावी होते गुंडा तत्व

इतना कुछ होने के बावजूद भी पुलिस उन लोगों को गिरफ़्तार करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। इतना ही नहीं शिकायतकर्ता पर समझौते हेतु दबाव बनाने के लिए तीन दिन बाद हमलावरों के बयान पर शिकायतकर्ता के विरुद्ध भी एक झूठा मुकदमा दर्ज कर दिया। इसके चलते अब समझौते के प्रयास तेज़ हो गये हैं जबकि असल शिकायतकर्ता ढाबा मालिक किसी कीमत पर समझौता करना नहीं चाहता था। पुलिस अब पुलिस की भूमिका न निभा कर समझौता अधिकारी की भूमिका निभाने में जुटी है। इस तरह का यह कोई अकेला मामला नहीं है। लगभग हर रोज़ हर थाने-चौकी में यही हो रहा है। पुलिसिया भाषा में इसे राज़ीनामा कहा जाता है। इसका संधि विच्छेद करें तो बना राज़ी + नामा अर्थात् दोनों पक्ष राज़ी तो पुलिस को मिले नक़दनामा। इसी के चलते आजकल गुंडा तत्व खुल कर गुंडागर्दी पर उतारू हैं। उन्हें पूरा भरोसा है कि अंत में थाने में जा कर होना तो राज़ीनामा ही है।

इसी भरोसे के चलते दिनांक 15-16 नवंबर की रात को विरेन्द्र नामक बावर्दी हवलदार को गुंडों ने सरे राह (दिल्ली-मथुरा रोड) खूब तबियत से पीटा। उसका 'कुसूर' सिर्फ़ इतना था कि सड़क से गुजरते वक्त उसने कुछ लोग़ों को एक व्यक्ति की पिटाई करते देखा था और एक पुलिसकर्मी होने के नाते अपना कर्त्तव्य निभाने हेतु वह रुक गया। उसने बीच-बचाव करा कर मामला जानना चाहा तो उसको भी उन गुंडों ने पीट-पीट कर लहू लुहान कर दिया। हवलदार बेचारा जब सेक्टर-31 थाने में शिकायत दर्ज कराने पहुंचा तो वह भी दर्ज न हो सकी, क्योंकि उसे पीटने वाले लोग़ और कोई नहीं, स्थानीय विधायक कौशिक के आदमी थे। ऐसी घटनायें पुलिस वालों को दुम दबा कर, दायें-बायें हो कर, मुंह छिपा कर टाइम पास करने का सबक देती हैं।

ऐसी ही एक अन्य घटना दिनांक 30. 11. 09 की है जब एक गैस एजेंसी के तिपहिया वाहन चालक को कुछ गुंडों ने पहले तो सड़क पर खूब पीटा, फ़िर उसके दफ़्तर में आ कर तोड़-फोड़ की, उसके मैनेजर ने अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर के मुश्किल से अपनी जान बचाई। घंटे भर चली इस वारदात की सूचना पास में स्थित पुलिस चौकी 21 डी को बार-बार दी गई, लेकिन पुलिस ने उक्त हवलदार विरेन्द्र की तरह मौके पर पहुंचने की 'ग़लती' नहीं की, क्योंकि वह जानते थे कि मौके पर जा कर अपनी फ़जीहत कराने की अपेक्षा बाद में राज़ीनामा कराना ज़्यादा फ़ायदेमंद होता है। अंत में हुआ भी वही। इस गुंडागर्दी का सरगना बदरोला का चर्चित बदमाश शशी था। गैस एजेंसी का मालिक भी कोई लल्लू-पंजू नहीं, बल्कि पूर्व मुख्यमंत्री बी डी गुप्ता का वह बेटा है जो कि अभी हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस टिकट का उम्मीदवार भी था। इस स्तर के आदमी भी गुंडों के खिलाफ़ खड़े होने की अपेक्षा समझौता करना ही बेहतर समझते हैं।

अदालती नाटकबाज़ी का एक नमूना

तो वहां अच्छा खासा हंगामा खड़ा हो गया और स्थानीय पुलिस ने जैसे-तैसे बीच-बचाव करा कर यथास्थिति को बरकरार रखा। इस मामले को कोर्ट के सामने रखकर प्यादे के विरुद्ध कार्रवाई की मांग प्रभावित पक्ष पिछले कई बरसों से कर रहा है। अब देखना है कि यह नाटक कितना लंबा खिंचता है।

सूचना

मज़दूर मोर्चा पाक्षिक समाचार पत्र

फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मज़दूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :

दीक्षित न्यूज एजेंसी 9811159238

अब बल्लभगढ़ व पलवल के पाठक भी अपने हॉकर से मजदूर मोर्चा प्राप्त कर सकते हैं। किसी कठिनाई की स्थिति में संपर्क करें :

ललित कौशिक

शॉप नं.6, अंबेडकर चौक, बल्लबगढ़
मोब. 9278108329

भूटानी न्यूज़ एजेंसी

मीनार गेट, पलवल। मोब.: 09354112741, 09728382049